Class: VIII	Department: Hindi (2nd Lang)	Date :25 .08.26
प्रश्नोत्तर	Topic: पाठ 5 कबीर के दोहे	Note: Pls. write in your Hindi note book

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 कबीर ने किस-किसकी अति अच्छी नहीं बताई है?

उत्तर -कबीर ने बोलना, चुप रहना, वर्षा और धूप चारों ही चीज़ों की अति को अच्छा नहीं माना है।

प्रश्न 2 आप दूसरों को किस प्रकार खुशी, शांति और सुख दे सकते हैं?

उत्तर -हम अहंकार रहित मधुर वाणी से दूसरों को खुशी, सुख और शांति दे सकते हैं।

प्रश्न 3 कबीर के अनुसार सबसे बड़ा तप क्या है?

उत्तर: सत्य का पालन करना सबसे बड़ा तप है।

प्रश्न 4 खजूर के पेड़ से कबीर ने क्या सीख दी है?

उत्तर: केवल बड़ा होना पर्याप्त नहीं है, हमें दूसरों के काम भी आना चाहिए।

प्रश्न 5 'सूप' किसका प्रतीक है?

उत्तर: 'सूप' विवेक और समझ-बूझ का प्रतीक है

लघु प्रश्न

प्रश्न 1 'बड़ा' होने से कबीर का क्या अभिप्राय है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:कबीर के अनुसार 'बड़ा' होने की सार्थकता तब है जब वह किसी के काम आ सके। अगर ऐसा नहीं है तो वह बड़प्पन खजूर के पेड़ की तरह बेकार है जो न तो किसी को छाया दे सकता और उसके फल भी बहुत दूर लगते हैं ।

प्रश्न 2 कबीर निंदकों को पास रखने की सलाह क्यों देते हैं?

उत्तर:निंदक जब हमारे पास रहेगा तो वह हमारी स्वाभाविक ख़ामियों पर नज़र रखेगा और निडर भाव से हमें बता देगा, जिससे हम उनमें आसानी से सुधार कर सकेंगे।

प्रश्न 3 कुसंगति किसका कुछ भी बिगाड़ नहीं पाती? उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:सज्जन (साधु) व्यक्तियों का कुसंगति कुछ नहीं बिगाड़ पाती। क्योंकि सज्जन व्यक्ति 'सूप' की भाँति अच्छे गुणों को तो अपना लेते हैं और बुराई को छोड़ देते हैं।

दीर्घ प्रश्न

प्रश्न 1 'साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय' दोहे में 'सूप' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर:इसका तात्पर्य यह है कि एक साधु का स्वभाव 'सूप' के समान होना चाहिए। जिस प्रकार सूप में अनाज फटकने पर भारी और काम का अनाज सूप के अंदर ही रह जाता है और हल्का कूड़ा-कचरा, तिनके और भूसा हवा में उड़कर बाहर निकल जाता है। ठीक उसी प्रकार एक साधु को भी समाज की अच्छी बातों और गुणों को अपना लेना चाहिए और बुराइयों को छोड़ देना चाहिए।

प्रश्न 2 ऐसी बानी बोलिए' दोहे से हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर: इस दोहे से हमें सीख मिलती है कि हमें हमेशा मीठी और शांत वाणी बोलनी चाहिए। हमारी अच्छी वाणी से दूसरों को खुशी और शांति मिलती है और हमें भी मन की शांति मिलती है। इसलिए हमें अहंकार छोड़कर प्रेम से बात करनी चाहिए ।